ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-9* December-2021
Anthology : The Research

सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" के काव्य में क्रान्ति के विविध आयाम

Various Dimensions of Revolution in the Poetry of Suryakant Tripathi "Nirala"

Paper Submission: 07/12/2021, Date of Acceptance: 18/12/2021, Date of Publication: 23/12/2021

स्नेह लता गुप्ता
विभागाध्यक्षा,
हिन्दी विभाग,
गिन्नी देवी मोदी गर्ल्स पी. जी. कॉलेज, मोदीनगर,
गाज़ियाबाद,
उत्तरप्रदेश, भारत

सारांश

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' छायावाद के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक हैं, लेकिन इसके साथ ही क्रान्तिकारी कवियों में उनका नाम सर्वोपरि है। उनके साहित्य में क्रान्ति, संघर्ष और विद्रोह के स्वर भरपूर रूप में विद्यमान हैं। निसन्देह उन्होंने समस्त परम्परागत संरचनात्मकता को चुनौती दी। उनके क्रान्तिकारी स्वरों को हम राष्ट्रीय नवजागरण के क्षेत्र में 'जागो फिर एक बार', 'शिवाजी की चिट्ठी', 'यमुना के प्रति', 'बादलराग' आदि कविताओं में तथा सामाजिक क्रान्ति के क्षेत्र में 'छलांग मारता चला गया, डिप्टी साहब सामने आये, महगूं महंगा रहा, बादलराग आदि कविताओं में देख सकते हैं। निराला की सामाजिक क्रान्ति की सार्थकता किसानों की मुक्ति में है - 'जीर्ण बाहु हे जीर्ण शरीर /तुझे बुलाता कृषक अधीर/ हे विप्लव के वीर।' निराला की सामाजिक क्रान्ति उनके नारी विषयक दृष्टिकोण में भी द्रष्टव्य हैं। उन्होनें 'तुलसीदास' में नारी के शक्तिरूप की उपासना करके उसके सबला और प्रेरक रूप को स्थापित किया। धार्मिक रूढ़ियों, पौराणिक देवी-देवताओं के प्रति अंध-श्रद्धा, मूर्ति-पूजा आदि का विरोध करके सांस्कृतिक क्षेत्र में भी क्रान्ति का परिधि विस्तृत की। 'जूही की कली' नये पत्ते की स्फटिक शिला, बादल आदि उनकी साहित्यिक क्षेत्र में क्रान्तिदर्शिता के अन्यतम प्रमाण हैं। 'सरोज स्मृति', शिवाजी का पत्र, 'सरोज स्मृति', तुलसीदास और 'राम की शक्ति पूजा' आदि कविताएँ लिखकर उन्होंने काव्य-विधाओं के क्षेत्र में नये-नये सार्थक प्रयोग किये। सार यह कि हिन्दी कविता में विषय, भाव, भाषा, छन्द, गीत, संगीत आदि क्षेत्रों में नये-नये क्रान्तिकारी प्रयोग करके काव्य की अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित करने का श्रेय निराला को ही है।

Suryakant Tripathi is one of the four main pillars of 'Nirala' Chhayavad, but at the same time his name is paramount among the revolutionary poets. The voices of revolution, struggle and rebellion are abundant in his literature. Undoubtedly, he challenged all traditional structuralism. We used his revolutionary voices in the field of national renaissance in poems like 'Jago Phir Ek Baar', 'Shivaji's letter', 'To Yamuna', 'Badalrag' etc. And in the field of social revolution, the Deputy Saheb went on leaping in front. Aaye, Mahgun is expensive, Badalrag etc. can be seen in poems. The meaning of Nirala's social revolution is in the liberation of the farmers - 'The old arms are the old bodies / you call the farmers impatient / O heroes of rebellion.' Nirala's social revolution is also visible in his women's approach. In 'Tulsidas', he established her strong and inspiring form by worshiping the power form of woman. By opposing religious customs, blind faith towards mythological gods and goddesses, idol-worship, etc., the scope of revolution was also expanded in the cultural field. 'Juhi's bud', crystal rock of new leaves, clouds etc. are the other proofs of revolution in his literary field. By writing poems like 'Saroj Smriti', letter of Shivaji, 'Saroj Smriti', Tulsidas and 'Shakti Puja of Ram', he made new meaningful experiments in the field of poetry. The essence is that Nirala is credited with developing the expressive ability of poetry in Hindi poetry by making new revolutionary experiments in the fields of subject, emotion, language, verses, songs, music etc.

मुख्य शब्द: साहित्यिक युग, राष्ट्रीय नवजागरण, सामाजिक क्रान्ति ।
Keywords: Literary Era, National Renaissance, Social Revolution.

प्रस्तावना

सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला" एक ऐसे क्रान्ति-धर्मी, संघर्षशील एवं विद्रोही व्यक्तित्व का नाम है, जो हिन्दी साहित्य में अप्रतिम है। क्रान्तिकारी कवियों में उनका स्थान सर्वोपरि है। उन्हें किसी भी बनी बनाई लीक पर चलना मंजूर नहीं था- न अपने जीवन में और न अपने साहित्य मे। "निराला के इस क्रान्तिकारी, ओजस्वी कवि का निर्माण उनके व्यक्तिगत जीवन के घात-प्रतिघातों से हुआ, किन्तु सामाजिक चोटों का प्रभाव भी कम नहीं है।"[1]

व्यक्तिगत जीवन संघर्ष

निराला का सम्पूर्ण जीवन संघर्ष की एक अलग ही कहानी है। जब ये केवल 3 वर्ष के थे, तब इनकी माता जी दिवंगत हो गई। पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में इनका विवाह मनोहरा देवी से हुआ, किन्तु पत्नी के साथ सुखमय जीवन अधिक समय तक नहीं टिक सका। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान एक ऐसी महामारी फैली, जिसमें इनकी पत्नी सहित परिवार के कुछ और सदस्यों की मृत्यु हो गई। अब ये केवल 20 वर्ष के थे, तब इनके पिता का भी असामयिक निधन हो गया। बाद में इनकी एक मात्र पुत्री सरोज की

भी मृत्यु हो गई। इन सब हदयविदारक आधातों से ये टूट से गए पर कुटृम्ब के पालन-पोषण का भार स्वयं झेलते हुए अपने मार्ग से विचलित नहीं हुए। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने अपने सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं किया और अपने जीवन तथा साहित्य में संघर्ष के पथ पर बढ़ते चले गए।

साहित्यिक युग

परिवेश की दृष्टि से निराला का काव्यकाल मुख्यतः तीन आयामों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम आयाम 1916 से 1936 तक छायावाद, दूसरा आयाम सन 36 से 43 तक प्रगतिवाद और तीसरा आयाम 43 से 61 तक का समय प्रयोगवादी काव्य के रूप में समझा जा सकता है। यों तो सभी छायावादी कवि अपने-अपने परिवेश एवं क्षेत्र में मुक्ति के अधिगायक एवं उदघोषक बने, किन्तु निराला के काव्य में क्रान्ति के स्वर अधिक मुखर रूप में ध्वनित होते हैं। ''सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में विद्रोह का सच्चा, दृढ़ और जीवन्त स्वर अपने पूरे आवेग के साथ अगर कहीं मिलता है तो एकमात्र निराला के कृतित्व में''। 2निसन्देह निराला ने समस्त परम्परागत सरंचनात्मकता को चुनौती दी। क्रान्ति इनकी पूजा थी और काव्य-सृष्टि पुजापा। निराला के क्रान्ति-दर्शन को हम निम्न संदर्भों में देख सकते हैं-

राष्ट्रीय नवजागरण

प्रसाद, पन्त आदि कवियों में जहां राष्ट्रीयपरक गीतों में अतीत के वैभव गान, भारतीय संस्कृति के स्वर्णकाल तथा देशभक्ति आदि के स्वर मिलते हैं, वहां निराला वर्तमान कायरता के प्रति सिंहनाद करके देश भक्ति के भाव का विस्तृतीकरण करते है। इस दृष्टि से निराला अपने युग के दिशा-निर्देशक हैं-

''सिंही की गोद से छीनता है रे शिशु कौन?
मौन भी क्या रहती वह रहते प्राण?
रे अजान
एक मेषमाता ही रहती है निर्निमेष।''[3]

निराला पराधीनता से समझौता करने वालों पर क्रुद्ध होते हैं। कुछ स्वार्थी और लालची लोग अंग्रेजों से उपाधियॉ पाकर अंग्रेजी राज्य को सींच रहे थे। ऐसे जयचन्दों और जयसिंहों को कवि ने ''शिवाजी की चिट्ठी'' लिखकर जगाने का स्तुत्य प्रयास किया। निराला की बादल राग, शिवाजी का पत्र, जागो फिर एक बार, यमुना के प्रति आदि राष्ट्रीय कविताएँ उन रचनाओं से भिन्न हैं, जो युगीन नेताओं से अभिभूत होकर लिखी गईं।

सामाजिक क्रान्ति

निराला के लिए स्वाधीनता आन्दोलन अभिन्न रूप से सामाजिक क्रान्ति से जुड़ा हुआ है। देश को स्वाधीन होना है, ग्रामीण जनता के सुखी समृद्ध जीवन के लिए उनकी क्रान्ति का लक्ष्य भारत को विदेशी पराधीनता से मुक्त करना ही नहीं, जनता के सामाजिक जीवन में मौलिक परिवर्तन करना भी है। निराला के क्रान्तिकारियों का क्षेत्र हमेशा गॉव होता है। क्रान्ति की सार्थकता है - किसानों की मुक्ति में। अंग्रेजी राज्य और जमींदारी शासन के दोहरे उत्पीड़न से जो किसान को मुक्त करे, वही सच्चा क्रान्तिकारी है। अतः निराला ''बादलराग'' में लिखते हैं-

''जीर्ण बाहु, है जीर्ण शरीर
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर।'' [4]

किसानों को शिक्षित किये बिना, उनका संगठन किये बिना भारत स्वाधीन नहीं हो सकता। निराला का यह दृढ़ विश्वास था। निराला की क्रान्ति एक पक्षीय न होकर बहुपक्षीय और बहुआयामी है। और इस बहुमुखी क्रान्ति की धुरी है - किसान। नये पत्ते में ''झींगुर डटकर बोला, ''छलांग मारता चला गया, डिप्टी साहब आए, महगूं महॅगा रहा'' जैसी कविताओं में निराला ने अपने अधिकारों के लिए संघबद्ध हुए किसानों के संघर्ष की कठिनाइयों का चित्रण किया। निराला जिस क्रान्ति का स्वप्न देखते हैं, उसकी परिणति वर्ग-विषमता को समाप्त करके समाजवादी व्यवस्था की रचना में है। निराला का प्रगतिवाद वर्ग - चेतना या वर्ग-संघर्ष पर आधारित न होकर उनकी मानवतावादी दृष्टि का परिणाम है-

''आज अमीरों की हवेली
किसानों की होगी पाठशाला
धोबी, पासी, चमार, तेली
खोलेंगें अधरों का ताला। [5]

निराला की सामाजिक क्रान्ति उनके नारी विषयक दृष्टिकोण के रूप में भी दृष्टव्य है। मध्ययुगीन सन्तों - भक्तों ने नारी को सिद्धि मार्ग की बाधा और माया - मायाविनी कहकर उसकी उपेक्षा की थी। रीतिकाल में वह विलास-वासना की पूर्ति का साधन मात्र बनी रही। किन्तु निराला ने नारी के शक्ति रूप की उपासना की। ''तुलसीदास'' में रत्नावली नारी वह ज्योति-किरण है जो मानव समाज के समस्त अन्धकार समूह को नष्ट करती है। ''तुलसीदास'' ने रत्नावली का भव्य चित्र नारी को अबला से सबला, कामिनी से काम दाहिनी, नील-वसना, शारदा, अग-जग व्यापिनी और अनल-प्रतिमा सिद्ध करता है।

सांस्कृतिक क्रान्ति

निराला ने राजनैतिक, सामाजिक, साहित्यिक ही नहीं, अपितु सांस्कृतिक क्रान्ति का भी नेतृत्व किया। उन्होंने धार्मिक रूढ़ियों, पौराणिक देवी-देवताओं के प्रति अन्ध श्रद्धा, मूर्ति-पूजा, साम्प्रदायिक प्रभाव, शूद्रों पर द्विजों के अत्याचार का विरोध किया। मनुष्य मात्र की समानता की घोषणा की और इस सारी कार्यवाही को उचित ठहराने के लिए दार्शनिक तर्क उपस्थित किए। रूढ़ियों से सघंर्ष की समस्या निराला के लिए राष्ट्रीय अभ्युत्थान की समस्या से जुड़ी हुई थी। निराला ने ज्ञान के आधार पर तमाम सामाजिक रूढ़ियों के बन्धन काटने का निर्देश दिया। जब तक हमारे कर्म ज्ञानाश्रित नहीं, तब तक राष्ट्र की चेतना भी स्वाधीन नहीं हो सकती। निराला का मानवतावाद प्राचीन रूढ़ियों और अन्धविश्वासों को निर्मूल करने, समाज का नये सिरे से गठित करने में सक्षम था। निराला के परम्परा-विरोध को ध्वनित करने वाली ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

"आँखों में नवजीवन की तू अंजन लगा पुनीत,
बिखर जाने दे प्राचीन।
बार-बार उर की वीणा में कर निष्ठुर झंकार,
उठा तू भैरव निर्जन राग।
बहा उसी स्वर में सदियों का दारूण हाहाकार
संचित कर दारूण अनुराग। [6]

"निराला जी हिन्दी में एक क्रान्तिकारी कवि के रूप में उपस्थित हुए। उन्होंने काव्य और दर्शन का अद्भुत समन्वय किया।"[7] निराला रहस्यवादी कविताएँ लिखते समय भी स्वयं को क्रान्ति से अलग नहीं कर पाते। उनका ब्रहम् स्वाधीनता आन्दोलन और सामाजिक क्रान्ति से सम्बद्ध हो जाता है। निराला के योग का उद्देश्य संसार से मुक्त होना ही नहीं, शक्ति संचय करके फिर इसी संसार में संघर्ष करना है।

क्रान्तिदर्शन

निराला का क्रान्तिदर्शन गांधीवाद और आतंकवाद से भिन्न, व्यापक और मौलिक रूप से क्रान्तिकारी है। स्वाधीनता आन्दोलन की वे तमाम प्रवृत्तियॉ जो गांधीवाद की सीमायें तोड़कर आगे बढ़ रही थीं, निराला में केन्द्रित हो गई थीं। गांधीवाद से हटकर निराला शक्ति-अर्जन के माध्यम से स्वतन्त्रता प्राप्त करना चाहते हैं। निराला के क्रान्ति-दर्शन की यह भी विशेषता है कि उनकी क्रान्ति सम्बन्धी भाव-धारा सन् 1947 के बाद भी प्रवाहित रहती है।

निराला की क्रान्ति जनवादी क्रान्ति है। क्रान्ति करना क्रान्तिकारियों का ही काम नहीं, क्रान्ति जनता करती है, तभी वह सफल होती है। ये पुराने ढंग की सामन्तविरोधी क्रान्ति नहीं, जैसी फ्रांस में हुई थी, न यह अंग्रेजों को निकालकर पूँजीवाद के विकास की क्रान्ति है। जैसी दूसरे महायुद्ध के बाद अनेक उपनिवेशों में हुई। यह तो नये ढंग की व्यापक जन-क्रान्ति है, जिसमें न केवल गॉव के किसान, वरन् शहर के शोषित-जन भी सत्ता पर अधिकार करने के लिए आगे बढ़ते हैं।

निराला के अनुसार क्रान्ति की मूल प्रेरणा मानव करूणा है। शताब्दियों की घुटन, लाखों मजदूरों का दारूण हा-हाकार क्रान्ति से ही शमित हो सकता है। यह आवश्यकता ही क्रान्ति को अनिवार्य बनाती है। निराला ने क्रान्ति के विनाशात्मक और रचनात्मक दोनों रूपों का चित्रण किया है। क्रान्ति का जो रूप सबसे पहले पहचान में आता है वह विनाशात्मक और हिंसात्मक है। सत्ता परिवर्तन एवं पूर्ण विप्लव के लिए क्रान्ति को हिंसा से अलग नहीं किया जा सकता। निराला ने दुर्गा देवी के माध्यम से हिंसक क्रान्ति का आह्वान किया है -

"एक बार बस और नाच तू श्यामा
भैरी भरी तेरी झंझा
तभी बजेगी मृत्यु लडाएगी जब मुझसे पंजा
लेगी खड़ग और खप्पर
उसमें रूधिर भरूंगा मॉ"
मैं अपनी अंजलि भरकर।" [8]

निराला की विप्लव प्रधान क्रान्ति का स्वरूप "बादलराग", जागो फिर एक बार, "महाराज शिवाजी का पत्र' जैसी कविताओं में पूर्णतया स्पष्ट हुआ है। निराला की क्रान्ति का केन्द्रीय प्रतीक है -बादल। विप्लव और विद्रोह की भावना को व्यक्त करने के लिए निराला ने अनेक कविताएँ लिखी हैं, किन्तु 'बादलराग' उनकी सबसे बड़ी विप्लवकारिणी कविता है।

इस प्रकार निराला की क्रान्ति ध्वंसक है, किन्तु क्रान्ति का तात्कालिक विनाशात्मक उद्देश्य अस्थायी है। क्रान्ति का मूल उद्देश्य रचनात्मक और स्थायी है। निराला के लिए विद्रोह, संघर्ष और क्रान्ति अपने आपमें लक्ष्य न होकर उपकरण मात्र हैं।

साहित्यिक क्रान्ति

निराला की साहित्यिक क्रान्ति जहां एक ओर प्राचीन रूढ़ियों की विनाशिका है, वहीं दूसरी ओर वह साहित्यिक परम्परा की रक्षिका भी है। उनका मत है कि पतझर के बाद बसन्त मैं जैसे प्रकृति नया जीवन पाती है, वैसे ही प्राचीन साहित्यिक परम्परा नये युग में परिवर्तित होती हुई सवंर्धित और विकसित होती है। निराला ने अपनी क्रान्तिकारी दृष्टि से साहित्य की परिधि विस्तृत की, पुरानी संकीर्ण रूढ़ियॉ तोड़कर उन्होंने नाना भावों और विचारों के आयात के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

निराला साहित्य में उपयोगितावाद के स्थान पर क्रान्तिकारी विचारधारा के समर्थक हैं। इसका प्रधान कारण तो कवि की मौलिकता है, जो कवि के दीप्त अहंकार की साहित्यिक अभिव्यक्ति है। सन् 1916 में "जूही की कली"

का प्रकाशन उस युग के साहित्य-चेताओं के लिए एक चुनौती बनकर सामने आया। उसमें व्यक्त प्रणय केलि और मुक्त छन्द का शिल्प दोनों ही तत्कालीन मान्यताओं से मेल नहीं खाते थे।भाव, भाषा, छन्द आदि सभी स्तरों पर नवीन मूल्यों की स्थापना निराला के काव्य की अन्यतम विशेषता है। रीतिकालीन और द्विवेदी कालीन काव्य मूल्यों एवं मानदण्डों को जैसी चुनौती निराला ने दी, वैसी उनके समकालीन या किसी नये रचनाकार ने नहीं। ''बेला'' में कवि के निवेदन से ही स्पष्ट है कि संग्रह में उसने नये-नये प्रयोग किए हैं। भाषाशैली, छन्द-बन्ध, लय-गति आदि अभिव्यक्ति पक्ष की नवीन प्रयोगात्मकता द्रष्टव्य है।

निराला ने भाषा सम्बन्धी अभिनव प्रयोग भी किए हैं। उनकी भाषा में अभूतपूर्व वैविध्य है। अन्य छायावादी कवियों की भाषाशैली जहा गम्भीरता की एकरसता से ग्रस्त अपनी-अपनी सीमाओं में बँधी है, वहाँ निराला अपने व्यंग्यात्मक और विडम्बनात्मक भाषाई प्रयोग से उस एकरसता को तोड़ते चले जाते हैं। निराला की भाषा का एकरूप संस्कृत बाहुल्य पदावली का है तो दूसरा रूप सरल और ठेठ हिन्दी भाषा के प्रयोग का है। भाषा का ऐसा वैचित्र्य अन्यत्र अनुपलब्ध है।

निराला जी ने सामाजिक विषमता, विवशता और शोषण आदि पर तीव्र व्यंग्य करके व्यंग्यकला को भी नई दिशा प्रदान की है। निराला की प्रतीक योजना भी अद्भुत है। उनके प्रति काव्य की सजावट मात्र के लिए नहीं है, वे उनके चिन्तन और भाव-बोध के अभिन्न अंग हैं। उन्होंने अपनी मौलिक प्रतिमा के कारण नये-नये प्रतीकों से कविता श्री की वृद्धि की है। उनकी क्रान्ति-चेतना को केन्द्रीय प्रतीक है बादल। बादल को वज्र हुंकार सुनकर संसार कॉप उठता है। वज्रपात से बड़े-बड़े पर्वत क्षत-विक्षत हो जाते हैं, किन्तु बादल की गर्जना सुनकर पृथ्वी के हृदय से सोते हुए अंकुर फूट पड़ते है।

शिल्पगत क्रान्ति के अन्तर्गत निराला की सबसे बड़ी क्रान्ति छन्द के सन्दर्भ में है। उनकी पहली कविता ''जूही की कली'' मुक्त छन्द में रचित है। 'परिमल' की भूमिका में निराला ने लिखा है ''मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति होती है.... कविता की मुक्ति है छन्दों के शासन से अलग हो जाना।9 छन्दों के बन्धन के प्रति विद्रोह करके उन्होंने मध्य युगीन मनोवृत्ति पर पहला आघात किया था, जो छन्द और कविता को समानार्थक समझने लगी थी। ''रूढ़ि-ग्रस्त छन्द के बन्धन को तोड़कर मुक्त छन्दों का निर्बाध प्रयोग देखकर हिन्दी जगत स्तंभित रह गया। बँधी बँधाई धारा में बँधने वाले कवियों ने कोप दृष्टि से देखा, आलोचकों ने आलोचना की। पर निराला पर उसका कोई प्रभाव न पड़ा।''[10]

काव्य विधाओं के क्षेत्र में भी निराला ने नये-नये प्रयोग किए है॥ उन्होंने ''जूही की कली'' और ''शैफालिका'' जैसी एक दृश्य प्रधान मुक्तक भी लिखे है साथ ही यमुना के प्रति'' जैसी कविताएं भी लिखी है, जिनमें दृश्यपट बदलता रहता है और भावों तथा विचारों की लम्बी श्रृंखला है। ''शिवाजी का पत्र'', ''जागो फिर एक बार'' सामान्य मुक्तकों से भिन्न है। ''सरोज-स्मृति'' विशिष्ट शोक गीत है, तो ''तुलसीदास'' लम्बी कविता और ''राम की शक्ति पूजा'' को काव्यरूप की दृष्टि से किसी परम्परागत सॉचे में नहीं रखा जा सकता।

अध्ययन का उद्देश्य

हिन्दी साहित्य के छात्रों के मन में निराला की छवि एक प्रमुख छायावादी कवि के रूप में ही प्रतिष्ठित हैं। 'जूही की कली' संध्या-सुन्दरी, वह तोड़ती पत्थर' जैसी लोकप्रिय कविताओं से ऐसी छवि बन जाना स्वाभाविक है लेकिन निराला एक बहुआयामी और विकासशील व्यक्तित्व के धनी हैं। इस शोधपत्र में हमने सोदाहरण यही दर्शाने का प्रयास किया है कि निराला जी का काव्य कभी किसी एक वाद या भाव-धारा में बँधकर नही रहा। उनका काव्य कभी किसी बँधी बँधाई लीक पर नहीं चला। उनके उन्मुक्त, स्वतन्त्र चेता और विद्रोही व्यक्तित्व की छाप उनके काव्य में सर्वत्र व्याप्त है। भाव और शिल्प दोनों ही क्षेत्र में क्रान्ति के विभिन्न स्वर असन्तोष, प्रतिरोध, विद्रोह, रूढ़ पदार्थों की विनाशेच्छा, नवसृजन आदि के रूप में विद्यमान हैं। इन्हीं स्वरों को सुधी पाठको के समक्ष सशक्त रूप से प्रस्तुत करना ही हमारे इस शोधपत्र का लक्ष्य है ताकि निराला जी के व्यक्तित्व का यह अपेक्षाकृत अल्पज्ञात पक्ष भी उनके संज्ञान में आ सके।

निष्कर्ष

निराला ने छायावाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद को नेतृत्व प्रदान किया। क्रान्तिकारी निराला किसी वाद विशेष में सीमित न रहकर सच्चे अर्थों में प्रयोगधर्मी रचनाकार हैं। उनकी आत्मा नई दिशा खोजने के लिए सदा विकल रही। कोमल मधुर गीतों की वंशी से ओज के शंख तक उनके स्वर साधना का उतार-चढ़ाव है। निराला का प्रयोग क्षेत्र बहुत विस्तृत है, भाव, विषय, भाषा, छन्द, गीत-संगीत आदि सभी क्षेत्रों में निराला ने क्रान्तिकारी प्रयोग किये। उन्होंने कथ्य और शिल्प के क्षेत्र में नये प्रयोग करके काव्य की अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित किया। हिन्दी कविता को सर्वथा नूतन भाषाशिल्प प्रदान करने का श्रेय निराला को ही है। उन्होंने अपने व्रिद्रोही तथा क्रान्तिकारी स्वर से नवजागरण उत्पन्न करने का सफल प्रयास किया और नवयुग का पथ प्रशस्त करते हुए रूढ़िमुक्त काव्य की अनिवार्यता पर बल दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ0 भगीरथ मिश्र-स्वाभिमानी और ओजस्वी कवि निराला-हि0सा0स0पत्रिका, श्रद्धांजलि विशेषांक-पृ0 330*
2. *डॉ0 जगदीश गुप्त-अन्तिम क्षणों की स्मृति- पृ0 506*
3. *परिमल, पृ0 204*
4. *अपरा - पृ0 3*
5. *बेला - पृ0 78*
6. *अनामिका - पृ0 67*
7. *आधुनिक कविता का मूल्यांकन-इन्द्रनाथ मदान - पृ0 232*
8. *अपरा - पृ0 107*
9. *परिमलः भूमिका - पृ0 2*
10. *श्री शिवनारायण खन्नाः महाकवि निराला और उनकी साहित्य रचना, हि0 सा0 पत्रिका पृ0 472*